

(P) → (S ques)

भाग 'क'

भाग 'ख'

✓ ① ≡ 50 number

✓ ⑤ ≡ 50 number

② ≡

⑥ ≡

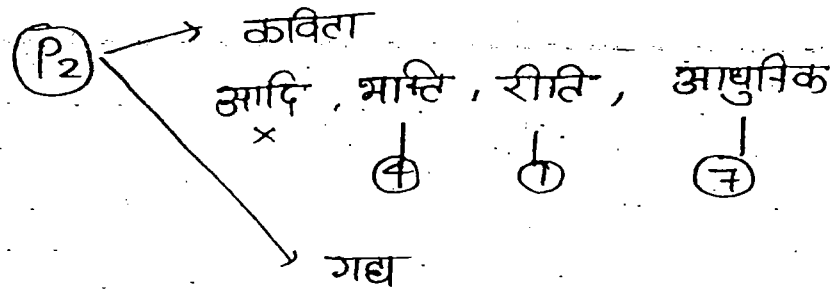
③ ≡

⑦ ≡

④ ≡

⑧ ≡

(P) → हिन्दी भाषा / देवनागरी लिपि का विकास
हिन्दी साहित्य का इतिहास
आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल,
आधुनिक काल



गोदान, मैला आँचल, दिल्या, महा-उपन्यास - ④
 भारत दुर्दशा, स्कन्दगुप्त, नाटक - ③
 आषाढ का एक कहानी - ②
 दिन निबन्ध - ②

कहानी → प्रेमचंद्र की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ, एक दुनिया
 - समानांतर

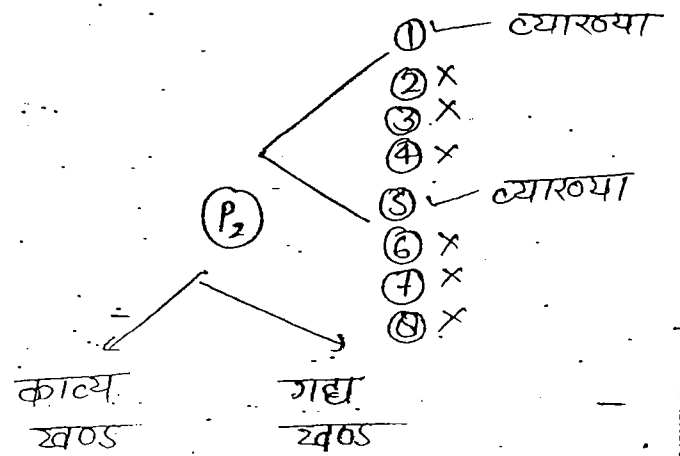
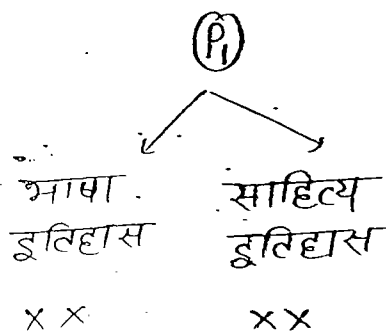
निबन्ध → चित्तामणि, निबन्ध निलय

①

क्षमताएँ :-

- लेखन क्षमता
- उदाहरण / उद्दधरण
- अशुद्धियाँ न करे

BOOKS



कहानी

प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ (प्रेम मंजूषा)

ईदगाह *

बड़े घर की बेटी *

सद्गति *

एक दुनिया समानान्तर (राजेन्द्र यादव)

उपन्यास

महाभोज (मनू भण्डारी)

दिव्या (यशपाल) (तत्सम शब्दावली)

जोदान (प्रेमचंद)

मैला आंचल (फणीश्वर नाथ रेणु)

नाटक

भारत दुर्देशा (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र) (कविताओं को होकर)

स्कन्द गुप्त (अयशंकर प्रसाद) (गीत होकर, तत्सम)

आषाढ़ का एक दिन (मोहन राकेश)

1950 - 60 → नवलेखन का दौर

→ एक दुनिया समानान्तर

→ आषाढ़ का एक दिन

(3)

वाङ्मय → वाक + मय

↓

भाषिक अभिव्यक्तियों
का सम्पूर्ण

भाषा →

1. व्यापक अर्थ
चशु-पक्षी
सांकेतिक

2. तकनीकी अर्थ

विशिष्ट

↓

मनुष्यों की वह भाषा
जो ध्वनियों से व्यक्त होती
है।

↓

केवल वे जो-उच्चारण
अवयवों से व्यक्त होती हैं।

↳ जो सार्थक शब्द
निकलते हैं।

भाषा

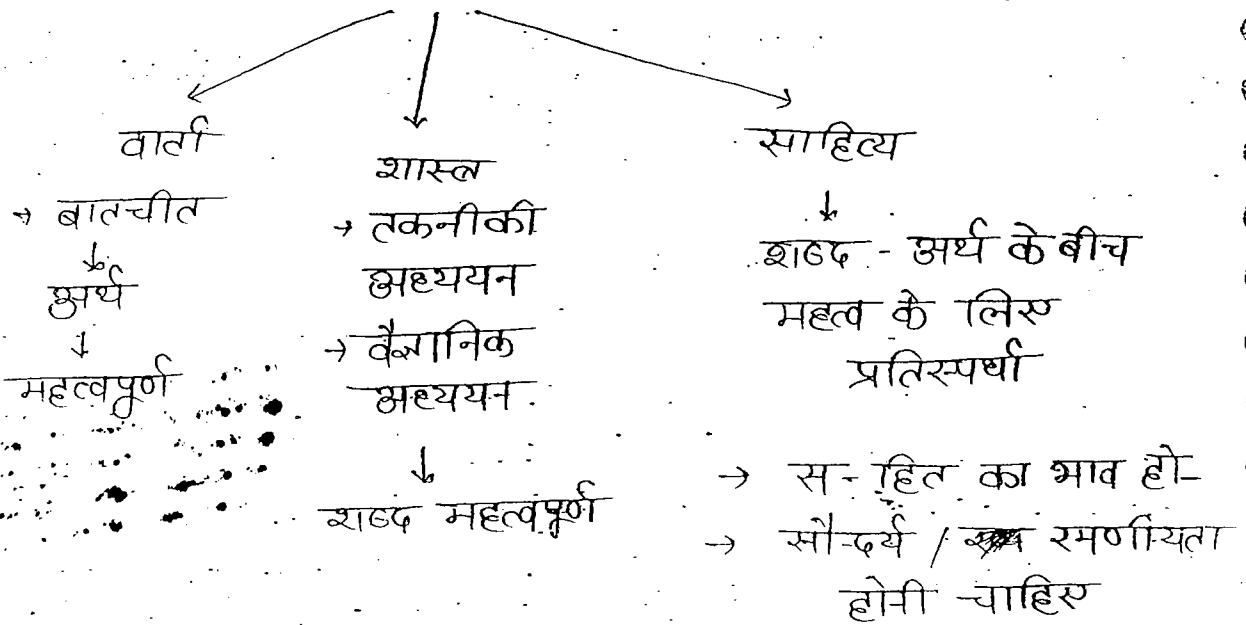
मौखिक

लिखित

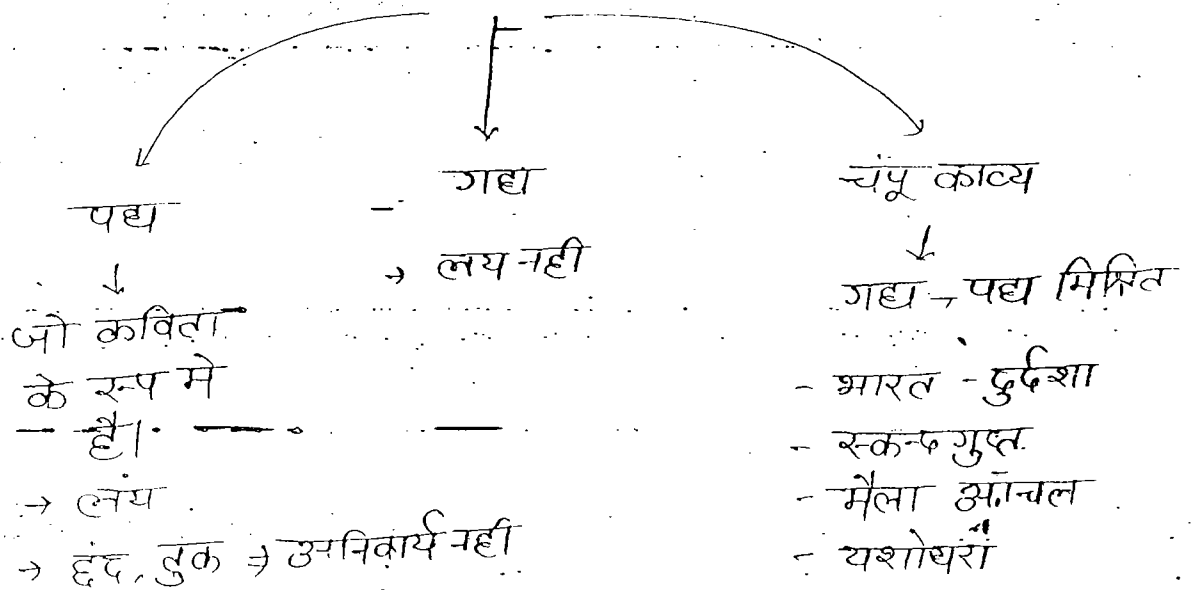
↓
लिपि

वाङ्मय

वाङ्मय



साहित्य



- ह्यायावाद

प्रसाद, पत्त, निराला, महादेवी

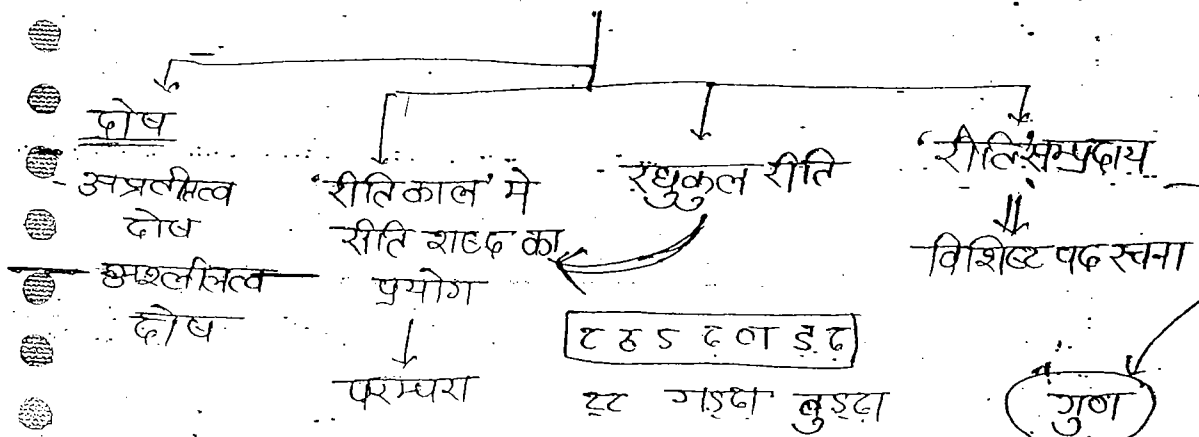
प्रयोगवाह

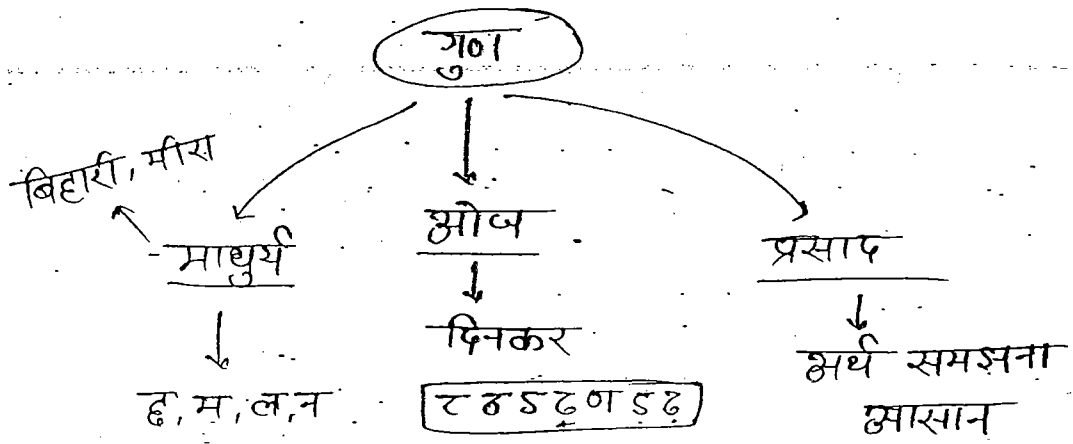
ठयं पना

1. शाब्दिक अर्थ में कोई बाधा नहीं होगी अर्थात् वह सम्भव होगा।
2. अन्तर्द्विक अर्थ के सम्भव होने के बावजूद -
 कृष्ण और श्रीला दोनों सम्भव रहे होंगे -
 कि अभिप्राय या आचार्य कुछ और हैं।
 यह दूसरा अर्थ ही व्यंजना वाला अर्थ है।

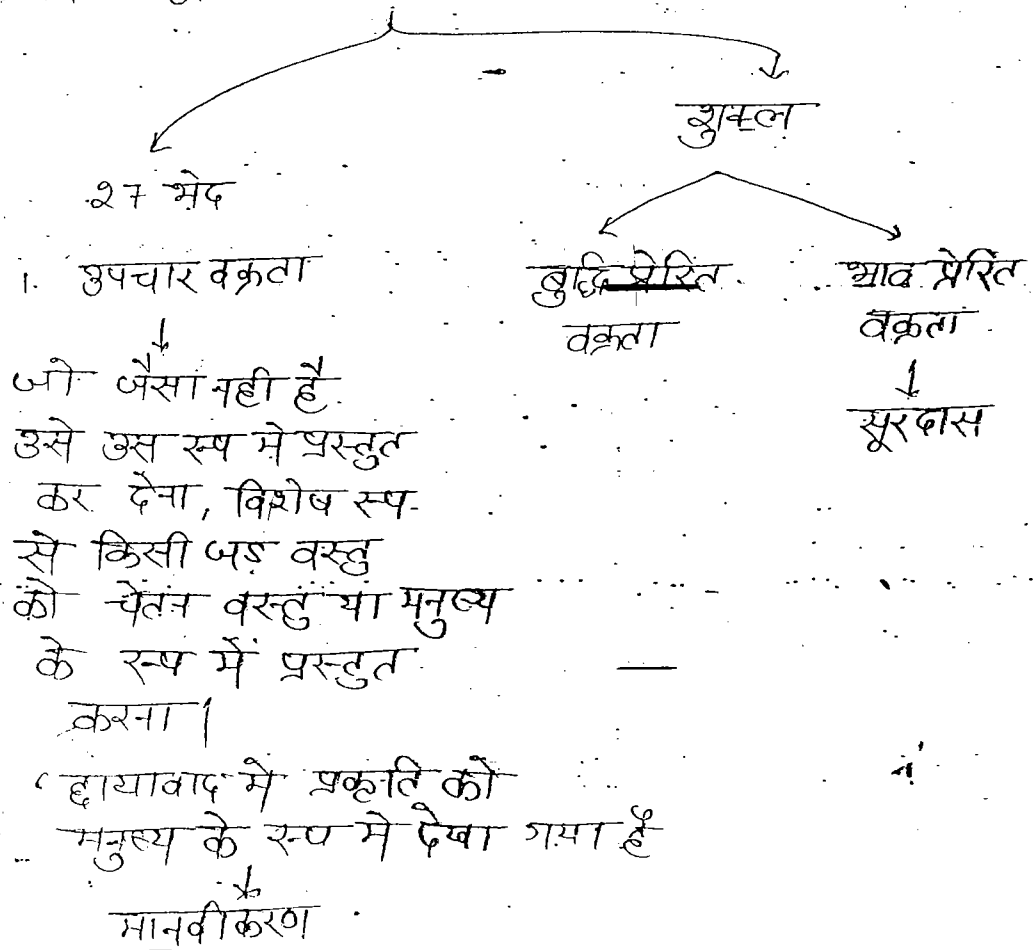
उ.४ :- चौराहे पर लिखा है, जिनको बदली की वे चले जाये

रीति सम्प्रदाय

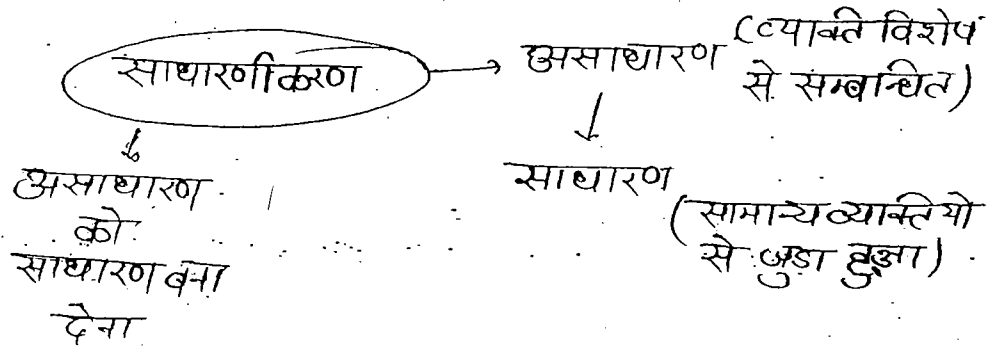
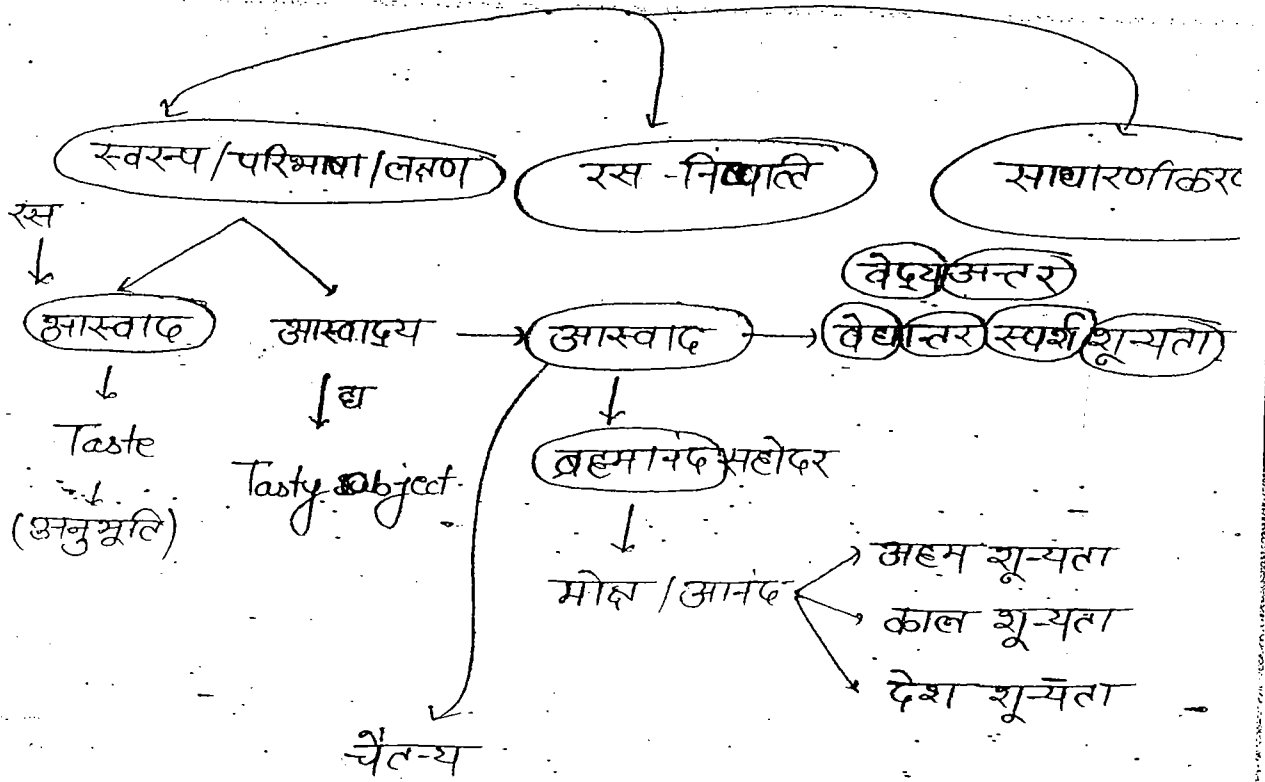


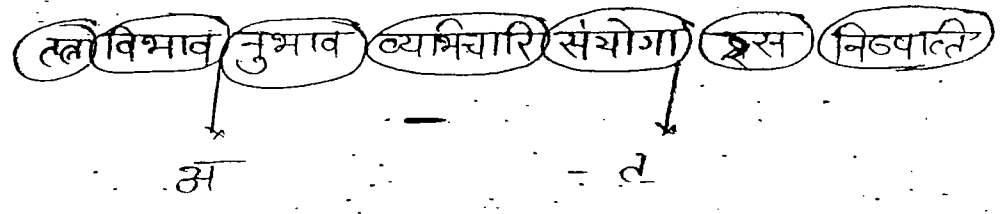
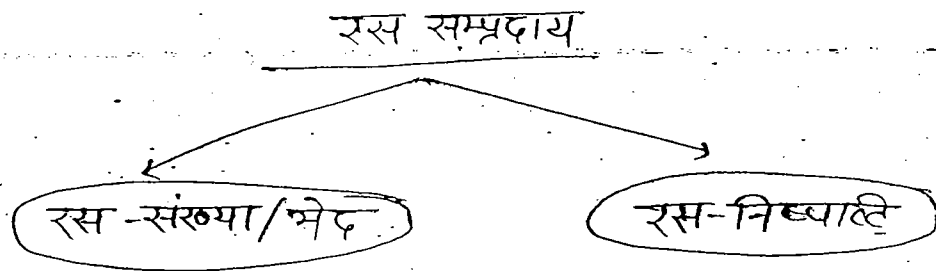


काव्य की भावना वक्रोक्ति → वक्र उक्ति



रस - सम्प्रदाय





त्व अर्थात् वहाँ पर (मंच पर) जब विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारीभाव (संचारीभाव) का संयोग (दर्शक के स्थायी भावों के साथ) होता है, तो (दर्शक के मन में) रस की निष्पात्ति होती है।
(निष्पात्ति का अर्थ अभिव्यक्ति से है)

स्थायीभाव

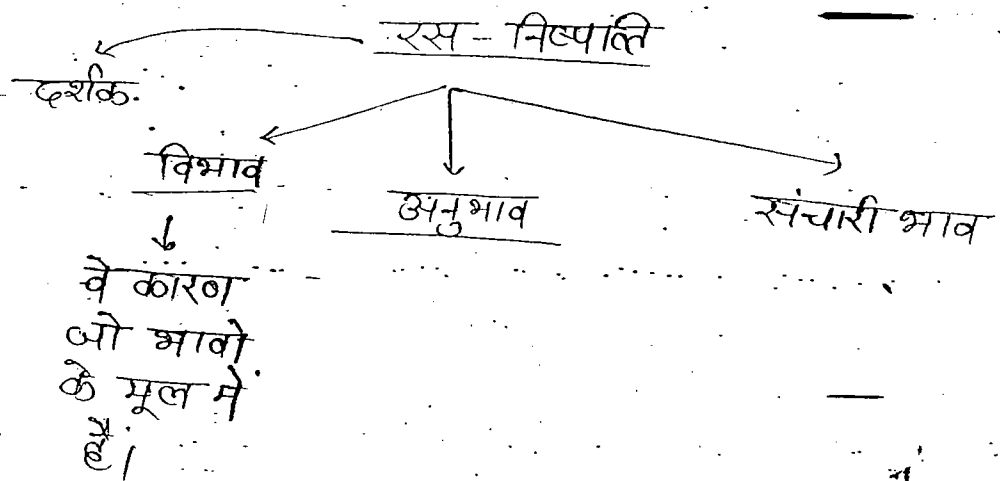
↓
रस की सम्पूर्ण प्रक्रिया में लगातार विद्यमान रहते हैं। स्थायीभाव की चरम अवस्था ही (परिपाक्व) ही रस की अवस्था है।

स्थायी भाव

रस

रति	—	शृंगार
शोक / दुःख	—	करुण
उत्साह	—	वीर
क्रोध	—	रोद्र
हास	—	हास्य
निर्वेद	—	शांत
पुण्यपसा	—	अवीमत्स
अभय	—	अभयानक
विस्मय	—	अद्भुत
ईश्वर विषयक रति	—	भक्ति
वात्सल्य	—	वत्सल

इन पर विवाद है।



विभाव

मालम्बन विभाव

उद्दीपन विभाव

↓
जिस पर कुछ टिका हुआ है अर्थात् वे कारण जो भावों को उत्पन्न करते हैं।

↓
वे भाव कारण जो भावों को जागृत करते हैं।

↓ दो प्रकार
उत्पन्न विषय माश्रय

वाक्य वातावरण विषय की चेष्टाएँ

जिसके प्रति कोई भाव पैदा हो
जिसके विषय के प्रति भाव पैदा हो

अनुभाव / अभिनय

यत्न

अयत्न / सात्विक

कायिक (आंगिक)

वाचिक

आहार्य

↓
शरीर के अंगों के माध्यम से अनुभव करना

↓
बोलकर

↓
वेशभूषा

+ अङ्ग
+ कंप
+ प्रलाप
+ उन्मत्त
+ विवर्णता
+ स्वेद